B.A.(H) Part-I (pol.sc.)
Date: 03/04/2020

By: OM KUMAR SINGH
Assistant Professor
Deptt. of Political Science
D.B. College, Jaynagar

पृष्ठभूमि एवं व्युत्पत्ति :

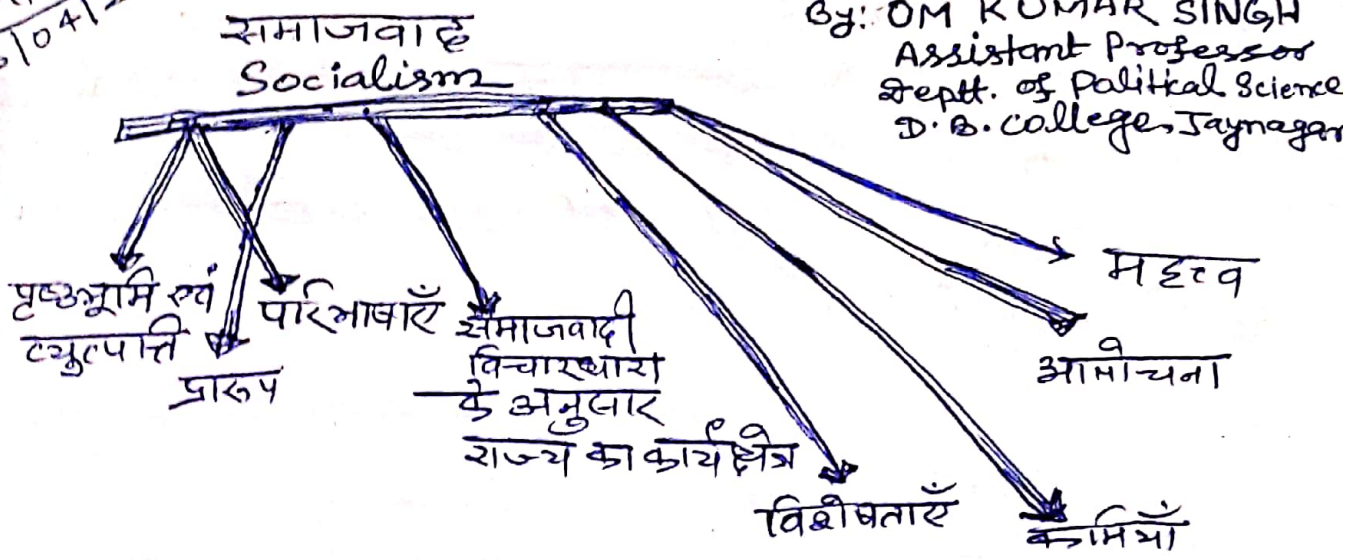

समाजवाद आर्थिक-सामाजिक विचारधारा है। प्रारंभिक चिन्तकों ने व्यावहारिक पक्ष पर बिना ध्यान देते हुए तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने हेतु महत्वाकांक्षी योजनाएँ प्रस्तुत कर एक प्रकार से समाजवाद की नींव डाली, जिसे 'स्वप्नलोकीय समाजवाद' कहा जाता है।

प्लेटो को पहला स्वप्नलोकीय चिन्तक माना जाता है। सर टॉमस मूर, सेन्ट साइमन, चार्ल्स फोरियर तथा रॉबर्ट ओवेन इस समाजवाद से जुड़े प्रमुख विचारक हैं।

चार्ल्स फूरियर तथा ब्रिटिश चिन्तक रॉबर्ट ओवेन की निष्पत्तियों से समाजवाद के आधुनिक और औपचारिक परिकल्पना निकलती है, जो 19वीं सदी के तीसरे एवं चौथे दशक में व्यक्तिवादी विचारधारा के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में आकार ग्रहण किया।

Socius ⟶ Socialism (समाजवाद)
(फ्रांसीसी)

समाजवाद अंग्रेजी शब्द 'Socialism' का हिन्दी रूपान्तरण है, जो फ्रांसीसी शब्द 'Socius' से निकला है, जिसका अर्थ है समाज। [illegible]

Scanned with CamScanner

समाजवाद के विभिन्न प्रारूप :-

(i) स्वप्नलोकीय समाजवाद
(Utopian socialism)

(ii) फेबियन समाजवाद
प्रमुख विचारक – सिडनी वेब, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, कोल, ऐनी बेसेंट, ग्रहम वालस आदि

(iii) वैज्ञानिक समाजवाद
[कार्ल मार्क्स & एंगेल्स (विचारक)

(iv) पुनरावृत्तिवाद

(v) समूहवाद तथा अराजकतावाद :
प्रोओधों, लिओ टालस्टाय, बाकुनिन, गाँधीजी आदि प्रमुख विचारक है।

(vi) गिल्ड समाजवाद

(vii) ईसाई समाजवाद

उपर्युक्त प्रारूपों का यदि विश्लेषण करेंगे तो हम पायेंगे कि समाजवाद का रूप काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलते रहा है। साथ ही, सी०ई०एम० जोड (C.E.M. Joad) के कथन " समाजवाद एक ऐसे टोप के समान है जिसकी आकृति भंग हो गयी है क्योंकि हर कोई उसे धारण करने का प्रयत्न करता है।" को भी चरितार्थ करती है।

परिभाषा :

वैसे समाजवाद को परिभाषित करना अत्यन्त ही कठिन है फिर भी विभिन्न विद्वानों के द्वारा इसे परिभाषित करने का प्रयास किया गया है जो इस प्रकार है –

(ड) "समाजवाद एक ऐसी जनतंत्रात्मक विचारधारा है, जिसका उद्देश्य समाज में एक ऐसा आर्थिक संगठन स्थापित करना है जो कि व्यक्ति को अधिकतम न्याय और स्वाधीनता प्रदान कर सके।" सेलर्स

Scanned with CamScanner

(ii) इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, "समाजवाद वह नीति या सिद्धांत है जिसका उद्देश्य केन्द्रीय लोकतंत्रात्मक सत्ता के आधार पर उत्पादन और वितरण की वर्तमान व्यवस्था के स्थान पर एक श्रेष्ठ व्यवस्था स्थापित करना है।"

(iii) जयप्रकाश नारायण के अनुसार, "समाजवादी समाज एक ऐसा वर्गविहीन समाज होगा, जिसमें सब श्रमजीवी होंगे। इस समाज में सारी सम्पत्ति सच्चे अर्थों में सार्वजनिक अथवा राष्ट्रीय सम्पत्ति होगी। अनार्जित आय तथा आय से सम्बंधित भीषण असमानताएँ सदैव के लिए समाप्त हो जाएगी। ऐसे समाज में मानव जीवन तथा उनकी प्रगति योग्यतानुकूल होगी और सब लोग सबके हित के लिए जीवित रहेंगे।"

(iv) रामजे मेकडानल्ड के अनुसार,

"सामान्य शब्दों में समाजवाद की इससे अच्छी परिभाषा नहीं दी जा सकती है कि यह समाज की भौतिक तथा आर्थिक शक्तियों को संगठित करना और उन पर मानवीय शक्ति का नियंत्रण स्थापित करना चाहता है।"

समाजवादी विचारधारा के अनुसार राज्य का कार्यक्षेत्र :-

इस विचारधारा के अनुसार राज्य का कार्यक्षेत्र अत्यन्त ही व्यापक है। सामान्यतयः निम्नलिखित है —

(i) सभी प्रकार की सुरक्षा, अपने नागरिकों को प्रदान करना।

(ii) उचित न्याय की व्यवस्था करना।

(iii) नागरिकों को शिक्षा एवं स्वास्थ्य का समुचित प्रबंध करना।

(iv) उत्पादन में वृद्धि एवं आर्थिक विषमता दूर करने हेतु प्रयास करते रहना।

(v) स्वस्थ मनोरंजन का प्रबंध।

(vi) असहाय लोगों की सहायता हेतु विशेष व्यवस्था करना।

Scanned with CamScanner

(ix) योग्यता एवं क्षमता के अनुसार सभी नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराना।
वर्णित कार्यों के अलावे वे सभी कार्य जो व्यक्ति एवं समाज के उन्नति के लिए हो, राज्य के कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

विशेषताएँ :-

(i) व्यक्तिवादी विकृतियों का निवारण किया गया।
(ii) समाजवादी व्यवस्था न्याय पर आधारित है।
(iii) यह आँगिक एकता सिद्धांत पर आधारित है।
(iv) इसके द्वारा संघर्ष के स्थान पर सहयोग की स्थापना की गई।
(v) यह व्यवस्था लोकतंत्र के अनुरूप है।
(vi) यह पूँजीवाद की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक है।

कमियाँ :-

(i) इसमें व्यक्तिवादी स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है।
(ii) इसको अपनाने से मनुष्य का नैतिक पतन हो जाता है, भ्रष्टाचार, गुटबंदी और व्यक्तिगत द्वेष में वृद्धि हो जाती है।
(iii) नौकरशाही का विकास होता है। काम की गति धीमी हो जाती है।
(iv) उत्पादन क्षमता में कमी हो जाती है।
(v) यह व्यवस्था खर्चीली है।
(vi) राज्य की कुशलता में कमी हो जाती है।
(vii) यह एक प्रकार की ~~व्यक्ति~~ व्यवस्थित लूट है।

आलोचना :
~~एवं महत्व~~ :

उपर्युक्त कमियों के कारण ही समाजवादी व्यवस्था की आलोचना की जाती है, हालांकि जो कमियाँ बताई गयी है, उसको दूर करने हेतु राज्य प्रयत्नशील है। लेकिन, वर्तमान समय के राज्य बड़ी उत्साह के साथ समाजवादी व्यवस्था को अपना रहे हैं।